National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(60): 118-121
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

राजेश कुमार
शोधच्छात्र,
नामांकन संख्या - AR1709998001
माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता-एवं संचार विश्वविद्यालय,
भोपाल, मध्य प्रदेश

Correspondence:
राजेश कुमार
शोधच्छात्र,
नामांकन संख्या - AR1709998001
माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता-एवं संचार विश्वविद्यालय,
भोपाल, मध्य प्रदेश

वेदांङ्गों की वर्त्तमान शैक्षिक प्रासंगिकता

राजेश कुमार

वेद तथा भारतीय वैदिक वाङ्मय की ज्ञान परम्परा को अद्यतन प्रवाहित करने वाले वेदांङ्गों का भारतीय शैक्षिक परम्परा में विशिष्ट स्थान है। यह नितांत सत्य है कि वेदों के गूढ़ार्थ को समझने के लिए वेदाङ्गों को सहायक ग्रंथ माना जाता है, जो कि वेदों के रहस्यों की उद्घाटित करने में सक्षम है और शिक्षा और समाज में वेदों के ज्ञान के लिए आवश्यक उपकरण के रूप में प्राप्त हैं। भारतीय ज्ञान परम्परा में मुख्यतः छ: वेदाङ्गों का वर्णन प्राप्त होता है जिनमें - **शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, और छन्द है।** इनके माध्यम से ही वेदों को संरक्षित और व्याख्यायित किया गया है। वर्त्तमान सन्दर्भ में शिक्षा का स्वरूप बहुत द्रुतगति से परिवर्त्तित हो रहा है, बदलते समय में विचार करना अत्यंत महत्वपूर्ण है कि वेदाङ्गों की वर्त्तमान समय में प्रासंगिकता क्या है? इनके द्वारा आधुनिक शिक्षा में समावेश करते हुए शिक्षार्थियों तथा समाज को एक सूत्र में सुसंगठित कर छात्रों को सुसंस्कृत किया जा सकता है।

इस शोधपत्र के माध्यम से वेदाङ्गों की प्रासंगिकता को विभिन्न दृष्टिकोणों से विश्लेषित किया गया है, तथा आधुनिक शिक्षा प्रणाली, सांस्कृतिक पुनरुत्थान, भाषा व तकनीकी अनुप्रयोग, तथा शिक्षा की समकालीन सामाजिक चुनौतियों का समाधान निहित है।

वेदाङ्ग का संक्षिप्त परिचय और उद्देश्य

वेद शब्द चार धातुओं से बनता है और चारों का अर्थ ज्ञान है। **विद् ज्ञाने, विद् विचारणे, विद्लृ लाभे, विद् सत्तायाम्** हैं। वेद परम प्रमाण अर्थात् आगम या शब्द-प्रमाण में सर्वोत्कृष्ट है। वेदाङ्ग शब्द "वेद" और "अंग" (अर्थात् भाग) के समुच्चय से बना है। ये छह वेदाङ्गों की सहायता के लिए विकसित किए गए है, क्योंकि वेदों को समझना बहुत कठिन है। मीमांसकों ने कहा है कि प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष व अनुमान के द्वारा हम जिस ज्ञान को प्राप्त नहीं कर सकतें हैं, उसको वेद से प्राप्त कर सकते हैं। वेद के गूढ़तम अर्थ को जानने के लिए वेदाङ्ग को पढ़ना नितांत आवश्यक है और यही मूल रूप में भारतीय ज्ञान परम्परा की नींव है। जैसे कि-

प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न विद्यते।
एवं विदन्ति वेदेन तस्माद् वेद्य वेदाता।।[1]

मुण्डकोपनिषद में छ: वेदाङ्गों की गणना भी इसी प्रकार की गयी है और उनको अपरा विद्या कहा गया है –

तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेदःसामवेदोऽथर्ववेदः।

शिक्षा कल्पो व्याकरणों निरुक्तं छन्दो ज्योतिषमिति।।[2]

पाणिनीय शिक्षा में भी वेदाङ्गों के बारे में बताया गया है और उनको वेद-पुरुष के विविध अवयवों का रूपक बताया गया है

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते ।।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्।
तस्मात्साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते ।।[3]

उपरोक्त सन्दर्भ कृत आशय से वेदाङ्गों की महती आवश्यकता पठन-पाठन में और आधिक प्रासंगिकता बड़ जाती है। इसलिए इन छ:वेदाग्डों का अध्ययन आवश्यक है।

शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरक्त, ज्योतिष तथा छन्द ।

शिक्षा –

जिस शास्त्र के अन्तर्गत वर्ण,स्वर, मात्रा, बल, साम, सन्तान का वर्णन किया गया है वह शिक्षा शास्त्र है। **ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका** में भी इसका वर्णन किया गया है। **वर्णस्वराद्युच्चारणप्रकारो यत्रोपदिश्यते सा शिक्षा।**[4] ठीक इसी प्रकार **तैत्तिरीयोपनिषद की शिक्षावल्ली** में भी वर्णन किया गया है -**वर्ण: स्वर: मात्रा बलं साम सन्तान:इत्युक्त: शिक्षाध्याय:।**[5] अर्थात् यह अंग प्रारम्भिक शिक्षा के लिये अति आवश्यक है क्योंकि उच्चारण और ध्वनियों की शिक्षा प्रारम्भ में ही दी जानी चाहिए जिससे छात्रों में उच्चारण संबंधी दोष न हो सके। वर्त्तमान शिक्षा में उच्चारण संबंधी दोष पर ध्यान न देकर सिर्फ सामान्य वर्णमाला को ही कंठस्थ कराया जाता है जबकि यह एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है, जिसमें वर्णों के उच्चारण स्थान का वर्णन किया गया है। जो उदात्त-अनुदात्त वर्ण शब्द व मात्राएं आदि के उच्चारण स्थान से स्वर विभेद से भिन्न-भिन्न है। **वरुणोच्चरण शिक्षा** में भी उच्चारणों पर विशेष बल दिया गया है। क्योंकि यदि जैसा लिखा है और वैसा ही उच्चारण न करते हैं, तो अर्थ विभेद हो जाता है। इस दृष्टि से स्वर विभेध ना हो सके, इसलिए वर्त्तमान समय में शिक्षा शास्त्र की नितांत आवश्यकता है, और मुख्य रूप से वर्त्तमान विदेशी शिक्षा का प्रभाव अत्यधिक होने के कारण हमारी भारतीय संस्कृत और हिंदी भाषा पर ध्यान न देकर अन्य भाषाओं पर ध्यान दिया जाता है। जो की उच्चारण संबंधी दोष का एक मुख्य कारण है। आज की प्रारंभिक शिक्षा में निश्चित रूप से इसको समाविष्ट करना चाहिए।

कल्प -

कल्प विभिन्न वैदिक शाखाओं के ब्राह्मण ग्रन्थों का वर्णन करने वाला वेदाङ्ग है। इसके विधि वाक्यों में, कर्मों को दर्पण रूप में बताया गया है। इसमें मानव के आचार, व्यवहार से सम्बन्धित धर्म का वर्णन किया गया है। इस प्रकार के सभी कर्म कल्प की परिधि में रखे गए हैं। विष्णुमित्र ने कल्प का लक्षण दिया है- **कल्पो वेदविहितानां कर्मणामानुपूर्व्येण कल्पनाशास्त्रम्**[6] वेदों में वर्णित कर्म व्यापक और विच्छिन्न थे, उनको सुव्यवस्थित व संक्षिप्त करके कल्प ग्रन्थों में सूत्रबद्ध किया है।

कल्प के चार भेद हैं – **श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र, तथा शुल्वसूत्र।**

1- श्रौतसूत्र में वैदिक ब्राह्मण ग्रंथों में वर्णित यज्ञ, अग्न्याधान, सोमरस, आदि का वर्णन है।
2- गृह्यसूत्र में गार्हस्थ जीवन तथा धार्मिक अनुष्ठानों संस्कारों यज्ञों तथा गृहस्थ जीवन के कर्त्तव्याकर्त्तव्य ,एवं पशुपालन आदि का निरूपण किया गया है।
3- धर्मसूत्र में सामाजिक जीवन के नियमों, विधि-निषेध, क्रिया-कलापों आचार-विचार, वर्णाश्रम-धर्म, दण्ड-विधान, प्रायश्चित, उत्तराधिकार, भक्ष्याभक्ष्य, आदि की विवेचना की गई है।
4- शुल्वसूत्र में यज्ञ वेदी के निर्माण की विधियों का वर्णन है।

इनका उद्देश्य न केवल वेदों को संरक्षित करना था, बल्कि वेदों की शिक्षाओं को दैनिक जीवन में प्रासंगिक बनाना भी था।

व्याकरण -

व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दा अनेन् इति व्याकरणं अर्थात् प्रकृति और प्रत्यय के विभाजन को व्याकरण कहते हैं। वेदाङ्गों का "व्याकरण" भाग, विशेषकर पाणिनी अष्टाध्यायी, आधुनिक भाषा विज्ञान की आधारशिला है। व्याकरण से शब्दों का निर्माण तथा उनकी शुद्धता भी होती है जैसा कि काव्यालंकार में भी कहा गया है कि- **शब्दस्मृते: शब्दशुद्धि:**[7] अर्थात् शब्द की शुद्धि व्याकरण से होती है। यह संरचनात्मक व्याकरण और भाषाई विश्लेषण के लिए मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है। आज के समय में, कंप्यूटर प्रोग्रामिंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में "नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग" (NLP) के क्षेत्र में पाणिनी के सूत्र उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं।

निरूक्त -

निरुक्त आचार्य यास्क द्वारा लिखा गया है,यह तो सर्वविदित है परन्तु महाभारत के मोक्षधर्म पर्व के अनुसार प्रजापति कश्यप को

इसका लेखक बताया गया है।[8] यह ग्रन्थ बहुत कठिन है, जो वेदाग्डों का एक अंग है, किन्तु वेदों के शब्दों का गूढ़तम अर्थ को बताने तथा सत्यासत्य शब्दार्थों को समझाने का कार्य निरुक्त ही करता है

ज्योतिष -

ज्योतिष वेदाड़्ग के द्वारा, समय-निर्धारण, कर्मानुष्ठान को, समय/काल को और प्राचीनतम खगोल विज्ञान को समझ सकते हैं। इसकी गणनाएँ आधुनिक खगोल विज्ञान और पंचाड़्ग निर्माण में सहायक हैं। इसके इतर यह शिक्षार्थियों को गणना और विश्लेषण की दक्षता प्रदान करता है। साथ ही भविष्य की खगोलीय घटनाओं की गणना करके राष्ट्र निर्माण में भी योगदान प्राप्त किया जा सकता है।

छन्द –

छन्द शास्त्र के लेखक पिङ्गल ऋषि हैं। इसमें पहले वैदिक छन्दों का तथा बाद में लौकिक छन्दों का वर्णन मिलता है,जबकि वेदों के अधिक मन्त्र पद्य रूप में है, उन मन्त्रों का विधि पूर्वक उच्चारण कराना छंद शास्त्र का कार्य है। ठीक इसी प्रकार संगीत में भी बिना छन्द के स्वर, लय, ताल नहीं आती है। यदि स्वर में कुछ अशुद्धता आती है तो छन्द शास्त्र से दूर कर सकते हैं जैसा कि काव्यालंकार सूत्राणि में एक सूत्र रूप में लिखा है- **छन्दोविचितेर्वृत्तंशयच्छेद**:[9]

शैक्षणिक प्रासंगिकता

***भाषाई दक्षता और उच्चारण**

भाषाई दक्षता के लिए अत्यन्त उपयोगी **"शिक्षा" वेदांड्ग है ।** जिसके माध्यम से प्राथमिक स्तर पर अध्ययन प्रारम्भ कराके छात्रों में ध्वनि और उच्चारण का वैज्ञानिकता पूर्वक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। जिसकी वर्त्तमान समय में **भाषण प्रशिक्षण, वॉयस रिकग्निशन तकनीक, और भाषाई शुद्धता** के लिए इसकी आवश्यकता है। जबकि बदलते सामाजिक परिवेश के लिए आधुनिक शिक्षा में **मल्टी-लिंग्वल** प्रशिक्षण में यह एक उपयोगी उपकरण रूप में **"वेदाड्ग शिक्षा"** सिद्ध होगा।

***सांस्कृतिक और नैतिक शिक्षा**

वेदांगों के माध्यम से ही भारतीय ज्ञान परम्परा भारतीयता की मूल संस्कृत भाषा और संस्कृति का संरक्षण किया जा सकता है। आज संस्कृत जन मानस की भाषा न होने से उसके संवर्धन में कठिनाइयां आ रही हैं, जबकि वैश्वीकरण के कारण भाषाई और सांस्कृतिक पहचान के संकट उत्पन्न हो रहे हैं, वेदांग शिक्षा में भारतीयता की संस्कृति समाहित है उसको शैक्षणिक दृष्टि से पहचानने और उन्हें पुनर्जीवित करने में वेदाग्ड् सहायक है।

***गणित और ज्योतिष**

"ज्योतिष" वेदाड्ग समय-निर्धारण और खगोल विज्ञान का प्राचीन सशक्त विज्ञान है। इसकी गणनाएँ आधुनिक खगोल विज्ञान और पंचांग निर्माण में सहायक हैं। इसके अलावा, यह शिक्षार्थियों को गणना और विश्लेषण की दक्षता प्रदान करता है।

तकनीकी युग में वेदाड़्गों का उपयोग

***डेटा संरचना और कम्प्यूटर विज्ञान में योगदान**

पाणिनी द्वारा लिखित अष्टाध्यायी में वर्णित व्याकरण के सूत्र नियमबद्ध है, और उनकी संरचना "एल्गोरिदमिक सोच" का उदाहरण हैं। ये आज के समय में डेटा संरचना, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, और प्रोग्रामिंग भाषाओं को समझने के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो रही हैं।

***ध्वनि और संगीत प्रौद्योगिकी में उपयोग**

वेदांग "शिक्षा" का संबंध ध्वनि और उच्चारण से माना जाता है, जो कि भाषण प्रसंस्करण, ऑडियो एनालिटिक्स, और म्यूजिक थैरेपी के क्षेत्र में उपयोगी सिद्ध होता है।

***खगोल विज्ञान और पर्यावरणीय अध्ययन**

"ज्योतिष" वेदांग में निहित खगोलीय ज्ञान को आज के समय में जलवायु अध्ययन, खगोलीय घटनाओं की भविष्यवाणी, और अंतरिक्ष अनुसंधान के लिए प्रयोग में लाया जाता है।

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

***नैतिक शिक्षा और जीवन मूल्य**

आधुनिक समय में शिक्षा के नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। अतः वेदाड़्गों के अध्ययन द्वारा छात्रों में नैतिक मूल्यों का विकास और जीवन की व्यावहारिक शिक्षा प्राप्त हो सकती है।

***भारतीय दर्शन और योग का प्रचार**

वेदाड़्ग भारतीय दर्शन का अभिन्न अंग हैं। इनका उपयोग योग, ध्यान, और मानसिक स्वास्थ्य में किया जा सकता है, जो कि आज के समय में बढ़ते तनाव और मानसिक विकारों से निपटने में सहायक हो सकता है।

***बहु-सांस्कृतिक समाज में योगदान**

वेदाङ्ग शिक्षा का अध्ययन केवल भारतीय शिक्षा तक सीमित नहीं है; यह वैश्विक स्तर पर बहु-सांस्कृतिक संवाद और सहयोग को प्रोत्साहित कर सकता है।

वेदाङ्गों के अध्ययन की चुनौतियाँ

1. भाषाई बाधाएँ- संस्कृत भाषा का जटिल व्याकरण और शैली इसे अधिकांश लोगों के लिए कठिन बनाता है।
2. आधुनिक शिक्षा प्रणाली में स्थान-आज की शिक्षा प्रणाली में वेदांगों को पर्याप्त स्थान नहीं दिया गया है।
3. प्रामाणिकता और व्याख्या का संकट-प्राचीन ग्रंथों की व्याख्या में विविधता के कारण भ्रम उत्पन्न होता है।

वेदाङ्गों का पुनरुत्थान व संभावित समाधान

1. संस्कृत का प्रचार वेदाङ्गों के अध्ययन के लिए संस्कृत भाषा को पुनर्जीवित करना आवश्यक है।
2. तकनीकी अनुप्रयोग डिजिटल माध्यमों और एआई (AI)तकनीकों का उपयोग कर वेदाङ्गों को जनसामान्य तक पहुँचाना।
3. इंटर-डिसिप्लिनरी (Inter Disciplinary)अध्ययन वेदाङ्गों को आधुनिक विषयों जैसे गणित, खगोल विज्ञान, और दर्शन के साथ जोड़ना।
4. प्रारंभिक शिक्षा में समावेश स्कूलों और विश्वविद्यालयों में वेदाङ्गों के मूल सिद्धांतों को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाना।

निष्कर्ष

वेदाङ्ग भारतीय ज्ञान परंपरा की एक अद्वितीय धरोहर हैं, जो वेदों के गूढ़ अर्थों को समझने, संरक्षित करने, और उनका व्यावहारिक उपयोग सुनिश्चित करने में सहायक हैं। यह शैक्षिक, सांस्कृतिक, और सामाजिक दृष्टिकोण से अनमोल हैं। शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, और छंद, ये छह वेदाङ्ग, न केवल वेदों की व्याख्या को सरल बनाते हैं, बल्कि वर्त्तमान समय की चुनौतियों और अवसरों को भी संबोधित करते हैं।

आधुनिक शिक्षा में वेदांगों का समावेश विभिन्न तरीकों से प्रासंगिक है। "**शिक्षा**" के माध्यम से भाषाई दक्षता और उच्चारण में सुधार संभव है। "**व्याकरण**" भाषा संरचना के नियमों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान करता है, जो कंप्यूटर विज्ञान और **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (Artificial Intelligence)** में उपयोगी है। "**ज्योतिष**" खगोल विज्ञान और समय निर्धारण में मदद करता है, जबकि **"निरुक्त"** शब्दों के अर्थों की गहराई तक पहुँचने में सहायक है। **"छंद"** लयबद्धता और संगीत कला में उपयोगी है, और **"कल्प"** समाज में आचार-व्यवहार और अनुष्ठानों के माध्यम से सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ करता है।

आज के संदर्भ में, वेदाङ्गों की शिक्षा का प्रचार-प्रसार नैतिक शिक्षा, भाषा संरक्षण, और सांस्कृतिक पुनरुत्थान में योगदान दे सकता है। इसके साथ ही, यह आधुनिक तकनीकी युग में डाटा संरचना, भाषाई प्रोसेसिंग, और खगोलीय अनुसंधान जैसे क्षेत्रों में भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

हालांकि, वेदांङ्गों को पुनर्जीवित करने में कई चुनौतियाँ हैं, जैसे भाषा की जटिलता, आधुनिक शिक्षा में उनकी सीमित स्वीकार्यता, और व्याख्या में विविधता। इन समस्याओं का समाधान संस्कृत का प्रचार-प्रसार, तकनीकी माध्यमों के उपयोग, और प्रारंभिक शिक्षा में वेदाङ्गों के समावेश से किया जा सकता है।

वेदाङ्गों की प्रासंगिकता आधुनिक शिक्षा और समाज के लिए अनमोल है। यह ज्ञान न केवल अतीत को संरक्षित करता है, बल्कि वर्त्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी नैतिक, बौद्धिक,और सांस्कृतिक दिशा प्रदान करता है। इनके समावेश से भारतीय शिक्षा प्रणाली को एक संतुलित और समृद्ध स्वरूप दिया जा सकता है। इसलिए, वेदाङ्ग की शैक्षिक प्रासंगिकता केवल धार्मिक या सांस्कृतिक सीमाओं तक सीमित नहीं है; यह आधुनिक विज्ञान, प्रौद्योगिकी, और समाजशास्त्र के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है।

पादटिप्पणी -

[1]सायणाचार्य तैतरीय संहिता भाष्य भूमिका

[2]मुण्डकोपनिषद 1/1/5

[3]पाणिनीय शिक्षा श्लोक संख्या 41-42

[4]ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका पृष्ठ संख्या 39

[5]तैत्तिरीयोपनिषद शिक्षवल्ली 1/2

[6]संस्कृत साहित्य का इतिहास पृष्ठ संख्या 90 डॉ.उमाशंकर शर्मा

[7]काव्यालङ्कार सूत्राणि तृतीयोऽध्याय सूत्र संख्या 4

[8]महाभारत मोक्षधर्मपर्व 342/86/7

[9]काव्यालंङ्कारसूत्राणि प्रथमाधिकरणे तृतीयोध्याय सूत्र संख्या 6